ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते। ऋग्वेद 1/59/1
हे परमेश्वर ! सब भक्त आपमें आनन्द पाते हैं।
O God ! The devotes find peace & happiness in you alone.

वर्ष 37, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 दिसम्बर, 2013 से रविवार 15 दिसम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य सभा मॉरीशस के पंजीकरण शताब्दी समारोह के अवसर पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस सम्पन्न : विशाल वैदिक केन्द्र का हुआ लोकार्पण

आर्यसमाज के क्रान्तिकारी आन्दोलन की आज अधिक आवश्यकता – कैलाश पुरियाग, महामहिम राष्ट्रपति

(बाएं) शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित अन्तर्राष्टीय आर्य महासम्मेलन के अवसर मंचस्थ मुख्य वक्ता वैदिक विद्वान डॉ. रामप्रकाश, मॉरीशस के महामहिम राष्ट्रपति श्री कैलाश पुरियाग जी एवं स्वामी धर्मदेव जी। (दाएं) इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से महामहिम राष्ट्रपति को स्मृति चिह्न के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र भेंट करते उपमन्त्री श्री विनय आर्य, उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य एवं उ.प्र. सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ।

महासम्मेलन के अवसर पर नवनिर्मित वैदिक केन्द्र का लोकार्पण भी किया गया। लोकार्पित किए गए नव निर्मित भवन का चित्र।
(विस्तृत समाचार एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में)

समलैंगिकता के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का आर्यसमाज ने किया जोरदार स्वागत

आर्यसमाज ने सर्वोच्च न्यायालय के उस फैसले का जोरदार सहर्ष स्वागत किया है, जिसमें समलैंगिकता को गैर-कानूनी करार दिया गया है। ज्ञात रहे वर्ष 2009 में दिल्ली हाई कोर्ट ने समलैंगिकता को मान्य करते हुए धारा-377 के तहत अप्राकृतिक अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था। हाई कोर्ट के इस फैसले पर आर्यसमाज सहित देश भर की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं में तीखा विरोध किया और इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। अब दिल्ली हाई कोर्ट के इस फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है और समलैंगिकता को गैर कानूनी करार दिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा कि समलैंगिकता भारतीय संस्कृति के विरुद्ध एक कुकृत्य है एवं सविधान के अनुसार गैरकानूनी है। इससे न केवल भारतीय लोकाचार का ह्रास होता है अपितु एड्स जैसे गम्भीर रोगियों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। समलैंगिकता विकृत मानसिकता और पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण का परिणाम है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने इस फैसले से न केवल भारतीय संस्कृति की रक्षा की है बल्कि सविधान निर्माताओं द्वारा मानव मूल्यों के रक्षार्थ निर्मित धारा-377 को भी सहेजा है। गौरतलब है कि आर्यसमाज निरन्तर भारतीय संस्कृति की रक्षा, उत्थान व मानव-निर्माण के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है।

आर्यसमाज के संस्थापक, वेदोद्धारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से प्रेरणाप्राप्त आचार्य राम देव जी द्वारा स्थापित

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

रविवार 22 दिसम्बर, 2013 : देहरादून

★यज्ञ : प्रातः 9 बजे ★ध्वजारोहण : प्रातः 10 बजे
★ सांस्कृतिक कार्यक्रम ★विद्वानों के उद्बोधन

87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभायात्रा

सोमवार 23 दिसम्बर, 2013 : हरिद्वार

★यज्ञ : प्रातः 8:00 बजे ★शोभायात्रा : प्रातः 9:00 बजे
★सार्वजनिक सभा : दोपहर 1:00 बजे

विस्तृत यात्रा विवरण पृष्ठ 6 पर

वेद-स्वाध्याय

मैं अभागा तुमसे दूर

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः। तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीलाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेही।। ऋग्वेद 10/83/5

अर्थ—हे ***(प्रचेत)*** परमज्ञानी परमेश्वर! मैं ***(अभागः सन्)*** भाग्यहीन ***(तविषस्य)*** बल उत्साह देने वाले ***(तव)*** आपके ***(क्रत्वा)*** यज्ञिय कर्म से ***(परा इतः अस्मि)*** दूर हो गया हूँ। ***(मन्यो)*** हे मन्युरूप परमेश्वर! ***(अहम्)*** मैं ***(अक्रतुः)*** यज्ञादि परोपकारक कर्मों से हीन ***(तं त्वा)*** उस आपका ***(जिहीडे)*** अनादर करता हूँ। ***(स्वा तनूः)*** मेरे शरीर एवं मन में ***(बलदेयाय)*** बल एवं उत्साह देने के लिये ***(मा इहि)*** मुझे प्राप्त हूजिये।

संसार में शक्ति का ही जय होता है। शक्ति सामर्थ्य अर्थात् किसी कार्य को पूर्ण करने की क्षमता का नाम है जिसमें शरीर का बल, मानसिक उत्साह और आत्मा का बल तीनों का समावेश है। इनमें भी आत्मिक बल का सर्वोच्च स्थान है। मन एवं शरीर में स्फूर्ति या उत्साह में आत्मबल ही हेतु है। जैसे उत्तम आहार-विहार से शरीर स्वस्थ रहता है, सत्य, धर्म के कार्यों से मन और ज्ञान-विज्ञान से बुद्धि, उसी भाँति आत्मा का बल परमात्मा की भक्ति से बढ़ता है। जो लोग परमात्मा की भक्ति, उपासना नहीं करते वे सचमुच में ही अभागे हैं। जैसे ज्वर का रोगी मीठे पदार्थ को भी कड़वा बताता है वैसे ही पूर्व जन्म के पाप या कुसंगति के कारण ईश्वर-भजन में मन लगता ही नहीं। परिणाम-स्वरूप ऐसा व्यक्ति अधर्म और असत्याचरण के कीचड़ में धंसता ही चला जाता है। जब तक यह विश्वास न हो जाये कि परमात्मा मेरे सभी कर्मों को जान रहा है और मुझे उनका फल मिलेगा ही, तब तक शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्ति नहीं होती। मन्त्र में एक नास्तिक की मनोव्यथा का वर्णन किया है—

अभागः सन्नप परेतो अस्मि—मैं अभागा ही रहा जो परमात्मा के अस्तित्व को ठुकरा स्वेच्छाचारी बन उससे दूर चला गया। मेरी जैसी दुर्गति हुई उसका वर्णन किसी कवि ने ठीक ही किया है—

पूर्वजन्म के पापन से भगवन्त कथा
न रुचे जिनको।
तिन एक कुनारी बुलाय लई
नचवावत है दिन को दिन को॥
मृदंग कहे धिक् है धिक् है मञ्जीर
कहे किन को किन को।
तब हाथ उठाय के नारी कहे इनको
इनको इनको इनको॥

जिसे कुसंग के सर्प ने डस लिया है उसका विष जन्म-जन्मान्तर में ही उतर पाता है। जब भी मैं किसी पापकर्म में प्रवृत्त हुआ तब हे प्रभो! आपने मुझ श्रद्धाहीन को भी उधर जाने से मना करने के लिए अश्रद्धा, ग्लानि, लज्जा के भाव प्रकट किये परन्तु मैं उन्हें समझ ही नहीं पाया कि आप ही मुझे उधर जाने से रोक रहे हो। मैंने तो यही समझा कि यह मेरी दुर्बलता है और अभ्यास से दूर हो जायेगी। धीरे-धीरे ऐसा ही हुआ। अब मुझे जघन्य कर्मों से भय नहीं लगता। परन्तु मेरे एक आस्तिक मित्र ने समझाया कि जैसे मलिन दर्पण में अपना मुख साफ दिखाई नहीं देता वैसे ही पाप कर्म से तुम्हारा चित्त इतना मलिन हो गया है कि ईश्वर की प्रेरणा तुम्हें स्पष्ट सुनाई नहीं देती।

तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः—हे चेतावनी देकर सावधान करने वाले ज्ञानमय प्रभो! मैं अज्ञानान्धकार से आच्छादित चित्त वाला हो आप द्वारा किये जा रहे यज्ञिय और परोपकारक कर्मों को करने से भी वञ्चित रहा। खाओ-पीओ-मौज करो, इस शरीर के भस्म हो जाने के पश्चात् फिर जन्म लेना किसने देखा है, इस भावना के वशीभूत हो मैं आपके सहाय से भी वञ्चित रहा। अनेक बार जीवन में संकट आये। उस समय भी मैं सावधान नहीं हुआ। यद्यपि आपने उस समय भी करुणाभाव से मुझे सावधान हो जाने की प्रेरणा दी परन्तु मैं उसे समझ ही नहीं पाया। अहा! तुम कितने दयालु हो जो अपनी प्रजा के लिये बिन मांगे ही वर्षा, सर्दी, गर्मी, ऋतुचक्र को प्रवर्तित कर नाना प्रकार के फल, अन्न, शाक, सब्जी आदि हमारे उपभोग के लिए दिये जाते हो। जीने के लिए वायु, जल और भूमि नदियाँ-नाले, पर्वत-समुद्र तथा नाना प्रकार के जीव जन्तु, पशु-पक्षी आदि हमारे उपयोग के लिए आपने ही बनाये हैं। आज मुझे यह ज्ञान हुआ कि वे लोग कितने कृतघ्न हैं जो आप जैसे दाता का दो शब्दों में धन्यवाद भी नहीं करते।

तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीडाहम्—हे दुष्टों पर कोप करने वाले भगवन्! जब आपका मन्यु प्रकट होता है तो पलभर में उनका मानमर्दित हो जाता है। मैं इस परिणाम से अनजान बना शुभ कर्मों से और भी दूर होता चला गया और अपने आपको नास्तिक कहलाने में गर्व का अनुभव करने लगा। अपने कुतर्कों से मैंने कितने ही ईश्वरभक्त और धार्मिक लोगों की आस्था का उपहास कर उन्हें अपना साथी बना लिया। मैं यह भी नहीं जान पाया कि जिस कीचड़ में मैं धंसा हुआ हूँ उस कीचड़ में भोले लोगों को फंसाना घनघोर अपराध है। जिन्हें मैं सुख के साधन समझ रहा था, वे फूलमाला के स्थान पर काले सर्प निकले। यद्यपि मैं अपने तर्कों द्वारा दूसरों को निरुत्तर कर देता था परन्तु अन्दर ही अन्दर मैं खोखला होता जा रहा था। अधर्म, अत्याचार, अन्याय का प्रतिकार करने की शक्ति मुझमें रह ही नहीं गई थी।

स्वातनूर्बलदेयाय मेहि—अब बस बहुत हो चुका। आज मैंने यह जान लिया है कि लोग '**बलमसि बलं मे देहि**' 'तुम बल के धाम हो मुझे भी बल प्रदान करो' की प्रार्थना क्यों करते हैं। 'सुने री मैंने निर्बल के बल राम' का रहस्य आज मेरी समझ में आया। जिन भौतिक पदार्थों का चयन कर मैंने अपने आप को बलवान् माना, उन पदार्थों में वे गुण भी आपने ही तो भरे हैं। अग्नि आपकी शक्ति के बिना एक तिनका भी नहीं जला सकती और वायु अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी एक तिनके को नहीं उड़ा सकता। यही अवस्था सभी देवों की है। ये सब आपकी महिमा से ही महिमावान् हुये हैं।

हे प्रभो! मैं आपके शरणागत हुआ यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरे शरीर, मन, बुद्धि में बल का संचार कीजिये और आत्मा को इतना सबल बनाइये कि वह पहाड़ जैसी आपत्ति में भी अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं हो पाये। मैं ही नहीं सारे लोग एक स्वर में कह उठें—**बलदेयाय मेहि—बलमसि बलं मे देहि।**

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज रानी बाग मेन रोड द्वारा एकत्र राशि

871	माता स्वर्णलेखा	100
872	सर्वश्री रमेश आहूजा	500
873	गोरव आहूजा	1000
874	श्रीमती राज आहूजा	1000
875	विश्वमित्र शास्त्री	6100
876	डॉ. तुलसीदास कुकरेजा	500
877	वीरेन्द्र कुमार	2500
878	श्रीमती पिंकी मुंजाल	500
879	श्रीमती कृष्णा रानी	200
880	हंसराज	500
881	सुरेन्द्र चोपड़ा	500
882	भूपेन्द्र कुमार गुगलानी	500
883	पंकज (रानी बाग)	100
884	सुभाष चावला	1100
885	सुदर्शन वर्मा	1100
886	दयानन्द कुकरेजा	2100
887	श्रीमती नीतू वालिया	500
888	वी. मदर्स कलैक्शन	100
889	श्रीमती इन्द्रा आहूजा	200
890	श्रीमती कुसुम नागपाल	500
891	श्रीमती सीता देवी सपरा	200
892	श्रीमती विमला	100

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

समसामयिक चर्चा

मौज-मस्ती-मजे में फंसा युवा वर्ग

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

शी तीन शब्द आज सुप्रचलित हो गये हैं तथा युवाओं के मन-मस्तिष्क में इस कदर घर कर गये हैं कि इनके बिना उन्हें अपनी स्वतन्त्रता ही अधूरी लगती है क्योंकि वे इसे अपना विशेषाधिकार समझते है। इन शब्दों का क्षेत्र सुविस्तृत है। इनके सहारे ही कभी तो बाइकर्स दिल्ली के कनाट प्लेस जैसे इलाकों में स्टंट करते है यानि हुडदंग मचाते हैं। तंग आकर आखिरकार दिल्ली पुलिस को इन स्वतन्त्रता प्रेमियों की सीमाहीन स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित करना ही पड़ा, तभी आम जनता ने चैन की सांस ली।

अब मांग हो रही है 'नाइट लाइफ' की। यह एक अंग्रेजी शब्द है तो स्पष्ट है कि इसके क्रियाकलाप भी अंग्रेजी पद्धति के ही होंगे। भारतीय संस्कृति में नाइट लाइफ -रात्रि जीवन जैसी कोई अवधारणा नहीं है, क्योंकि रात्रि का नाम रात्रि इसीलिए है कि वह आपको, यहां तक कि पशु-पक्षियों को भी दैनिक कार्यों से उपरत-निवृत कर देती है। यह आवश्यक भी है क्योंकि कार्य करने से दिन में जो शारीरिक न्यूनता उत्पन्न होती है, उसे रात्री विश्राम देकर पूर्ण करती है। जीवन का यही क्रम प्रकृति के अनुकूल है। जो इस क्रम के विपरीत आचरण करते हैं, वे लोग असाधारण होते है। इनके दो ही प्रकार हैं। प्रथम के विषय में कहा गया है-या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। योगी व्यक्ति रात्रि में जागकर ईश्वर चिन्तन करते है, शान्ति प्राप्त करते हैं। दूसरा तबका उन लोगों का है जो रात्रि में ही खान-पान, घूमना-फिरना तथा अन्य भी कार्य स्वेच्छानुसार करते है। ऐसे लोग पहले भी थे, वे अब भी हैं तथा आगे भी रहेंगे, किन्तु उन्हें निशाचर या निशिचर कहा जाता है। चर धातु के दो अर्थ है- गति तथा भक्षण। जो लोग रात में ही इधर-उधर घूमते है, खाते-पीते मौज उडातें फिरते है, उनके लिए यही सार्थक नाम है। रावण की लंका ऐसे लोगों से पूर्ण थी। मुम्बई, पुणे आदि में यह प्रथा जन्म ले चुकी है तो दिल्ली क्यों पीछे रहे। आज का युवा वर्ग इसका कितना भूखा है, इसका अनुमान 'नवभारत टाइम्स' के छपे युवाओं के विचारों से मिलता है। मान्या खुराना नाम की एक लड़की लिखती है "सबको अपनी लाइफ एन्जॉय करने का पूरा हक है। बात हो अगर नाइट लाइफ की तो उसका मजा ही कुछ अलग है। दोस्तों के साथ टाइम निकालकर लेट-नाइट खाने-पीने का, आउटलेट्स में मस्ती करने का मजा ही कुछ अलग है"।

यह है, मौज-मस्ती और मजा जिसके पीछे आज का युवा वर्ग दीवाना है। युवतियां भी इस काम में पीछे नहीं क्योंकि इससे ही उनकी प्रगतिवादिता प्रकट होती है। पता नहीं ब्वाय फ्रेंड तथा गर्ल फ्रेंड ये दो शब्द भारत में कहां से आए हैं। शायद विदेश से ही, क्योंकि इनके पीछे छिपी संस्कृति भी विदेशी ही है। भारत में ये दोनों शब्द कभी भी नहीं रहे। यहां तो पुरुष वर्ग अपने से छोटी को पुत्री, बराबर उम्र की युवती को बहिन तथा बड़ी वाली को माता मानता था। उनका पारस्परिक सम्बोधन भी वही था। तभी तो महिलाओं की इज्जत सुरक्षित थी, किन्तु जब से यह फ्रेंडशिप चली है, तभी से अपहरण, बलात्कार तथा हत्याएं हो रही है। रात्रि में कहीं बैठे हुए दो युवक-युवती मित्रता के नाम पर साथ-साथ बैठे शराब पी रहे है, नाच-गाना कर रहे हैं, इधर-उधर की गप-शप लगा रहे है, तो इसकी परिणति किस रूप में होगी, इसका अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है क्योंकि वे दोनों ब्रह्मचर्यव्रती भी नहीं है। इसे तो वे पिछड़ापन तथा दकियानूसीपन कहते हैं। नैतिकता नाम की किसी चीज़ को वे स्वीकार नहीं करते, बस उसका तो एक ही उद्देश्य है-लाइफ एन्जॉय। वह किसी तरह प्राप्त हो, इसकी उन्हें परवाह नहीं। मनुस्मृति आदि शास्त्रों में आठ प्रकार के मैथुन लिखे हैं, जिनसे प्रत्येक व्यक्ति को बचना चाहिए।

1. कामभाव से दर्शन, स्पर्शन, केलि-क्रीड़ा, एकान्त में गुप्त बातें। अगले चार तो और भी गम्भीर हैं। आज कल युवक-युवतियां इन चारों को करते हुए कहीं भी दिखलायी दे जायेंगे। यही है आज की फ्रेंडशिप तथा मोज-मस्ती जो वर्तमान में युवक -युवतियों के मन पर छायी हुई है। अब तक लड़कियां अपनी पवित्रता की रक्षा करती रही हैं, किन्तु इस मोज-मस्ती, मजे की संस्कृति ने उन्हें बदल डाला। यही कारण है कि वे अपने पुरुष मित्रों के साथ नाइट लाइफ इन्जॉय करना चाहती हैं। खुशबू जैसी अभिनेत्रियों के इस कथन से उन्हें बल मिलता है कि आज युवकों को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि मेरी होने वाली पत्नी बिलकुल ही परपुरुष सम्पर्क से रहित होगी। बात बिल्कुल ठीक है। पहले कहा जाता था कि यदि धन खो गया तो कुछ भी नहीं खोया किन्तु यदि चरित्र खो गया तो सब कुछ खो गया। आज तो यही कहा जायेगा कि चरित्र खो गया तो कुछ भी नहीं खोया किन्तु यदि धन खो गया तो सब कुछ खो गया।

वैसे भी चरित्र जैसे शब्द को ही आज के युवावर्ग ने व्यर्थ समझकर अपनी जीवन शैली से ही निकाल दिया है क्योंकि यह उनके मौज-मस्ती तथा मजे में बाधक जो है। कहां जायेगा यह देश। यहाँ तो सम्राट विश्वपति उद्घोष करते थे-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः। नानयहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैटी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे राज्य में कृपण-मद्यप, अयाज्ञिक, अविद्वान, तथा व्यभिचारी स्त्री-पुरुष नहीं है। आज तो प्रधानमंत्री को यह घोषणा करनी पड़ेगी-

जनपदे सन्ति सर्वत्र कदर्याश्च मद्यपः। विचरन्ति स्वेच्छयात्र स्वैरिरुः स्वैष्टिण्यस्तथा।।

अर्थात् मेरे देश में शराबी, जमाखोर तथा व्याभिचारी स्त्री-पुरुष सर्वत्र सुलभ है। यही मौज-मस्ती इस युवा वर्ग के ऊपर सवार है।

आपको स्मरण होगा कि अति विलम्ब से एक रेस्तारां में जाकर शराब मांगने पर मना होने से मस्ती भरे एक युवक ने जेसिका लाल नामक युवती को गोली मार दी थी। ये युवक सड़कों पर जरा-सा भी झगड़ा होने पर तुरन्त पिस्टल तान लेते है। लाल बत्ती पर रुकना इन्हें मंजूर नहीं। चैक करने के लिए गाड़ी रुकवाने पर ये युवक सिपाही को ही रौंदते हुए चले जाते हैं। युवतियां भी इनमें सम्मिलित हैं। यही है आज की मौज-मस्ती। यही वर्ग अंग्रेजी नववर्ष पर तथा 25 दिसम्बर को मौज-मस्ती के नाम पर रातभर हुडदंग मचाता है, शराब पीता है। यह सब विदेशी संस्कृति की करामात है जिसने हमारे युवावर्ग को आकाश बेल की तरह लपेट लिया है।

अधिक कष्ट तो महिला वर्ग की दशा पर होता है कि आज स्वतन्त्रता के नाम पर उसने कितनी मर्यादाहीन स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। आज उसके शरीर पर वस्त्र कम होते जा रहे हैं। मुस्लिम युवतियां अब भी अपने शरीर को ढांप कर रखती हैं। स्थिति इतनी बदतर हो गयी कि कॉलेजो तथा स्कूलों में ड्रेस कोड लागू करने पड़ रहे हैं किन्तु उनका भी विरोध तुरन्त हो जाता है। कॉलेजों में कच्छे मात्र पहनकर आने वाली लड़कियां आज पर्याप्त हैं। क्या यही स्वतन्त्रता का अर्थ है? आज अभिनेत्रियां अपने आपकों सेक्सी (कामुक) दीखने तथा कहलाने में गर्व अनुभव करती हैं जबकि भूतकाल में यह अपमान वाची शब्द था। एक बहुत बड़े सन्त स्वामी आत्मानन्द जी कहते थे कि श्रृंगार व्याभिचार का दूत है तथा सादगी सदाचार की जननी है। आज यदि नारी सेक्सी दीखने पर गर्व करती है तो व्यभिचार पनपेगा या नही? इसे कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती। वाल्मीकि रामायण में भगवान् राम कहते है-

फलं दृष्टवा पुष्पं दृष्टवा दृष्टवा च नव यौवनम्। एकान्ते कांचनं दृष्ट्वा कस्य न विचलेन्मनः।।

अर्थात् सुन्दर पुष्प, फल, नवयौवन तथा एकान्त में पड़े सुवर्ण को देखकर किसका मन विचलित नहीं होगा? यही कारण है कि आज अपहरण, बलात्कार तथा हत्याएं रोजमर्रा की घटना बन गयी हैं। वर्तमान जीवन का अंग बन गयी है।

आज युवतियां भी अनुचित रूप से नौकरी आदि या अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए पदासीन पुरुषों से मैत्री करती हैं, उनके आगे आत्म समर्पण करती हैं। बात बढ़ने पर उनकी हत्या कर दी जाती है। उ.प्र. के मन्त्री अमरमणि त्रिपाठी से कविता नामक कवयित्री की मैत्री ही उसकी मृत्यु का कारण बनी थी। हरियाणा के मंत्री कांडा तथा दीपिका की मैत्री भी ऐसे ही थी। कांडा तथा अमरमणि दोनों ही जेल में हैं। पुरुषों की मानसिकता से मनु सुपरिचित थे तभी तो उन्होंने ऐसा कठोर नियम बनाया कि जो विश्वभर में कहीं नहीं मिलेगा।

मात्रा स्वस्रा दुहिता वा न विविक्तासनो भवेत्। बलवान् इन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्णाति।।

व्यक्ति को अपनी माता, बेटी के साथ भी एकान्त में एक ही पलंग पर नहीं बैठना चाहिए क्योंकि बलवान् इन्द्रिया विद्वान् को भी पथभ्रष्ट कर देती हैं। कितनी दूर दृष्टि है इसमें मनु की। जो युवक-युवती या स्त्री-पुरूष स्वतन्त्र घूमते है। साथ-साथ शराब तथा अन्य खाना-पीना करते रहते है। परस्पर स्पर्श, क्रीडा तथा गुहम भाषण में जिन्हें कोई आपति नहीं । जिनके आगे सामाजिक मान-सम्मान, पारिवारिक मर्यादा, नैतिकता तथा ब्रह्मचर्य आदि का कोई महत्त्व नहीं। बस उनका तो एक ही लक्ष्य है मौज-मस्ती तथा मजा। अर्थात् अपनी इन्द्रियों की अप्रतिबन्धित इच्छा पूर्ति। जो भी मन में आए उसकी पूर्ति। ऐसा युवावर्ग ही आज नाइट लाइफ की वकालत कर रहा है। व्यास तो कहते थे-

युवैव धर्मशीलः स्यात् अर्थात् युवावस्था में ही धर्म का आचरण प्रारम्भ कर देना चाहिए, किन्तु आज का युवावर्ग तो 'युवा एव मौजशीलः स्यात्। अर्थात् युवावस्था में ही मौज-मस्ती कर लेनी चाहिए, बुढापे में कहां कर पायेंगे। इसी का अनुयायी हो रहा है, किन्तु उसे पता नही कि इससे न केवल उसका जीवन ही बर्बाद हो रहा है, अपितु इससे तो देश का भी आधःपतन हो रहा है। युवाओं की प्रिय शराब के विषय में दिल्ली की माननीय जज कामिनी ला कहती हैं - 'शराब की बढ़ती खपत और बढ़ते अपराधों, विशेषकर यौन हिंसा के अपराधों में निश्चित तौर पर आपसी सम्बन्ध है।'

- बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली -34

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

समय की चुनौती का जवाब थे स्वामी श्रद्धानन्द

यह लेख साप्ताहिक आर्यसन्देश के 23 दिसम्बर, 1984 के अंक में प्रकाशित किया गया था। समय एवं लेख की उपयोगिता को देखते हुए 30 वर्ष पश्चात् पुनः इसे पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। - सम्पादक

- प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

आरनॉल्ड तोयनबी एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री हुए हैं। उन्होंने समाज में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में एक नियम का प्रतिपादन किया है। उनका कथन है कि समाज में जब कोई असाधारण परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, तब वह व्यक्ति व समाज के लिए चुनौती या चैलेंज का रूप धारण कर लेती है, वह परिस्थिति व्यक्ति तथा समाज को मानो ललकारती है, उसके सामने एक आह्वान पटकती है, और पूछती है कि कोई माई का लाल जो इस असाधारण परिस्थिति का, इस ललकार का, इस आह्वान का मर्द होकर सामना कर सके, इस ललकार का जवाब दे सके?

तोयनबी का कथन है कि जब हम वैयक्तिक या सामाजिक रूप से किसी भौतिक या सामाजिक विकट परिस्थिति से घिर जाते है, तब हम में या समाज में उस कठिन परिस्थिति, कठिन समस्या को हल करने के लिए एक असाधारण क्रियाशक्ति असाधारण स्फुरण उत्पन्न हो जाता है। भौतिक अथवा कठिन, विषम परिस्थिति हमें मलियामेट न कर दे, इसलिए इस परिस्थिति के आह्वान, उसकी ललकार, उसके चैलेंज के प्रति जो व्यक्ति प्रतिक्रिया करने के लिए उठ खड़े होते हैं, चैलेंज उत्तर देते हे। जो समाज को नया मोड़ देते है, वे ही समाज के नेता कहलाते है। जब समाज किसी उलझन में फंस जाता है तब उसमें से निकलना तो हर एक चाहता है, हर व्यक्ति की यही इच्छा होती है कि यह संकट दूर हो, परन्तु हर कोई उस चैलेंज का सामना करने के लिए अखाडें में उतरने को तैयार नहीं होता। विक्षुब्ध समाज का असन्तोष, उसकी बेचैनी जिस व्यक्ति के प्रतिबिम्बित होने पर जो व्यक्ति उस असन्तोष का सामना करने के लिए खम ठोककर खड़ा होता है, वही जानता की आकांक्षाओं का सरताज होता है।

मैं स्वामी श्रद्धानन्द जीवन की इसी दृष्टि से देखता हूँ। वे समय की चुनौती का, समय की ललकार का जीता-जागता जवाब थे। क्या हमारे सामने चुनौतियों या ललकारें नहीं आती? हम हर दिन चुनौतियों से घिरे हुए है, परन्तु हम में उन चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत नहीं। व्यक्ति जीवित रहता है जब वह चुनौतियों का सामना करता रहता है, समाज की चुनौती का काम ही व्यक्ति अथवा समाज में हिम्मत जगा देता है, परन्तु ऐसी अवस्था भी आ सकती है। जब व्यक्ति अथवा समाज इतनी हिम्मत हार बैठे कि उसमें ललकार का सामना करने की ताकत ही न रहें। ऐसी हालत में वह व्यक्ति बेकार हो जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द उन व्यक्तियों में से थे जो सामने चैलेंज को देखकर उसका सामना करने के लिए शक्ति के उफान से भर जाते थे। उनका जीवन हर चुनौती का जवाब था, तभी पचास वर्ष बीत जाने पर भी हम उन्हें नहीं भूला सके।

उनके जीवन के पन्नों को पलटकर देखिए कि वे क्या थे? वे अपनी जीवनी में लिखते हैं कि जब उनके बच्चे स्कूल से पढ़कर आते थे तब गाते थे- 'ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल'। आज भी हमारे सामने ऐसी कोई बात चुनौती का रूप नहीं पैदा करती। उस समय वे महात्मा मुन्शीराम थे, उनके सामने बच्चों को इस प्रकार गाना एक चुनौती के रूप में उठ खड़ा हुआ जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में एक नवीन शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई। आज जो सब लोग गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सिद्धान्तों को शिक्षा के आदर्श तथा मूलभूत सिद्धान्त मानने लगे हैं उसका मूल एक चुनौती का सामना करना था जो एक साधारण घटना के रूप में महात्मा मुन्शीराम के सामने उठ खड़ी हुई थी।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़तें हुए उन्होंने पढ़ा कि गृहस्थाश्रम के बाद वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए। यह कोई नया आविष्कार नहीं था। जो भी वैदिक संस्कृति से परिचित है वह जानता है कि इस संस्कृति में ये चार आश्रम है। परन्तु नहीं, उस महान् आत्मा के सामने तो यह एक चैलेंज था। पहले सब है, परन्तु उसके लिए तो पढ़ना पढने के लिए नहीं, करने के लिए था। गुरुकुल विश्वविद्यालय की एक जंगल में स्थापना कर वे वहीं रहने लगे- मृत वानप्रस्थाश्रम को उन्होंने अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देकर जीवित कर दिया। यह क्या था अगर वैदिक संस्कृति की चुनौती का जवाब नहीं था। फिर वानप्रस्थ तक जाकर ही टिक नहीं गये। वानप्रस्थ के बाद संन्यास लिया, और देश में जितना महात्मा मुंशीराम यह नाम तो विख्यात हो गया। ऐसे भी लोग मुझे मिले है जो 'महात्मा मुंशीराम' और स्वामी श्रद्धानन्द-इन दोनों को अलग अलग व्यक्ति समझते है। इसका कारण यही है कि महात्मा मुन्शीराम ने जिस प्रकार लगातार चुनौती पर चुनौती सामना किया, उसी प्रकार श्रद्धानन्द ने चुनौती का सामना किया, इसलिए कुछ व्यक्तियों के लिए जो यह नहीं जानते थे कि महात्मा मुन्शीराम ही संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये- ये नाम दो महापुरुषों के नाम हो गए जो अपने-अपने जीवनकाल में असाधारण सामाजिक परिस्थितियों, सामाजिक ललकारों और चुनौतियों के साथ जूझकर अपने जीवन की अमर कहानी लिख गयें।

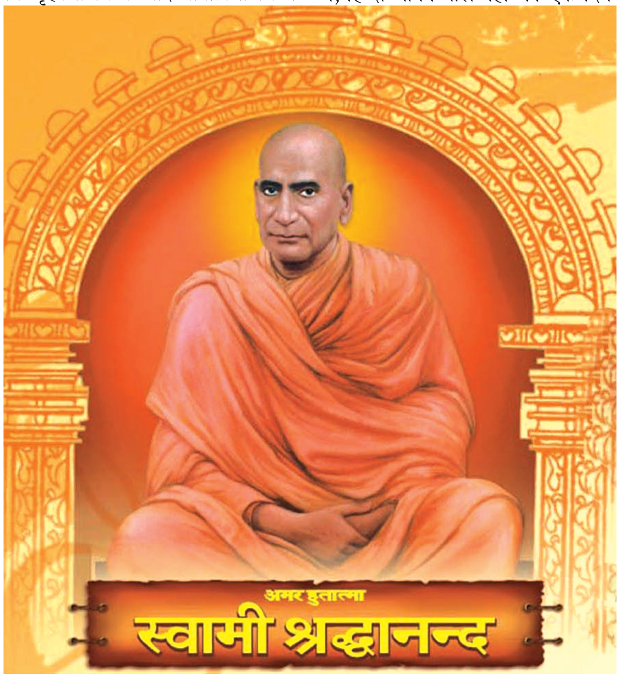

गुरुकुल में रहते हुए वे एक पत्र निकाला करते थे जिसका नाम था 'सद्धर्म प्रचारक' यह पत्र उर्दू में प्रकाशित हुआ करता था। इसके ग्राहक उर्दू जानने वाले थे, हिन्दी जानने वाले नहीं थे। एक दिन अचानक वह पत्र सब ग्राहकों के पास उर्दू के स्थान पर हिन्दी में पहुंचा। यह क्या चुनौति का जवाब नहीं थ? जिस व्यक्ति ने घोषणा की हो कि वह गुरुकुल में ऊंची से ऊंची शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी में देने का प्रबन्ध करेगा, उसका पत्र उर्दू में प्रकाशित हो- यह विडम्बना थीं। उन्हें मालूम था कि एकदम उर्दू से हिन्दी पत्र करने से ग्राहक छंट जायेंगे, परन्तु इस चैलेंज का उन्हें सामना करना था। परिणाम यह हुआ कि उनकी आवाज को सुनने के लिए ग्राहकों ने हिन्दी सीखना शुरू किया और पत्र के ग्राहक पहले से कई गुना बढ गए। लोग हिन्दी की दुहाई देते और उर्दू या अंग्रेजी लिखते-बोलते थे परन्तु उस महान् आत्मा के लिए यही बात एक चुनौती का काम कर गई।

वे किस प्रकार चुनौती का सामना करते थे- इसके एक नहीं अनेक उदाहरण है। सत्याग्रह के दिनों में जब जनता जलूस दिल्ली के घंटा घर की तरफ बढ़ता जा रहा था, तब गोरे सिपाहियों ने जलूस को रोकने के लिए गोली चलाने की धमकी दी थीं। यह धमकी उस महान् आत्मा के लिए भारत माता की बलिवेदी पर अपने को कुर्बान कर देने की ललकार थी। साधारण मिट्टी के लोग उस धमकी को सुनकर ही तितर-बितर हो जाते परन्तु श्रद्धानन्द ही था जिसने छाती तानकर गोरों को गोली चलाने के लिए ललकारा। समाजशास्त्र का यह नियम है कि असाधारण परिस्थिति उत्पन्न होने पर महान् आत्मा के हृदय में असाधारण स्फुरण हो जाता है, असाधारण क्रियाशक्ति जो उसे समकालीन मानव समाज से बहुत ऊंचे ले जाकर शिखर पर खड़ा कर देती है।

मुझे इस स्थल मथुरा शताब्दी की एक घटना स्मरण हो आती है। उत्सव हो रहा था। स्वामी जी उत्सव का संचालन कर रहे थे, मुझे उन्होंने अपने पास कार्यवाही के संचालन को बैठाया हुआ था। अचानक खबर आयी कि शहर में दंगा, पण्डों ने आर्यसमाजियों को पीटा, उन पर लट्ठ चलाए। स्वामी जी इस समाचार को सुनते ही मुझसे कहने लगे देखो, कार्यवाही बदस्तूर चलती रहे, तुम यहां से मत हिलना, मैं मथूरा शहर जा रहा हूं। स्वामी जी उसी समय धटना स्थल पर पहुंचे और स्थिति को संभालकर लोटे उनके जीवन की एक-एक घटना तोयनबी के इस समाजशास्त्रीय नियम की विशद व्याख्या है कि विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकल ने के जूझना चाहता है, परन्तु भीरूता के कारण जूझ नहीं पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है तो सब की पीड़ा को अपने हृदय में चीखकर परिस्थिति की विषमता से लड़ने के लिए उठ खड़ा होता है, और जब कोई ऐसा महापुरुष समाने आता है तब उसके सिर उसके पैरों पर नत हो जाते हैं।

समय की चुनौती का जवाब देने वाले महापुरुष भारत में हुए है उनकी श्रेणी में श्रद्धानन्द का नाम स्वर्णक्षरों में लिखा जा चुका है। ऐसी महान् आत्मा को मेरा बार-बार नमस्कार है।

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH हवन सामग्री
मात्र 70/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

दिनांक 6 दिसम्बर को आसाम में नव निर्मित राजा गोविन्द आर्ष गुरुकुलम का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में उपस्थित आसाम के महामहिम राज्यपाल श्री जानकी वल्लभ पटनायक, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं अन्य महानुभाव।

नेलशन मंडेला को आर्यसमाज की ओर से श्रद्धांजलि

नई दिल्ली में आयोजित पूर्व अफ्रीकी राष्ट्रपति एवं सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता नेलशन मंडेला को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर सम्बोधित करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य। इस अवसर विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

श्रद्धानन्द महान् : ग्यारह दोहे

ऋषिवर के पीछे हुए, श्रद्धानन्द महान।
युगों-युगों तक कर रहा, जग उनका गुणगान।।1।।

जीवन में जो कुछ किया, श्रद्धा उसका मूल।
उत्तरार्द्ध उत्कर्ष कर, की न पुनः भूल।।2।।

सेवा-व्रत जो है कठिन, ले उसका संकल्प।
जीवन-भर उस पर चले, सोचा नहीं विकल्प।।3।।

दलितों का उद्धार कर, दिया उन्हें नव प्राण।
भटके जन को शुद्ध कर, विधवाओं का त्राण।।4।।

धर्मान्तर जो कर गये, उन्हें बनाया आर्य।
जीवन का यह था मिशन, सारा जग हो आर्य।।5।।

गुरुकुल शिक्षा के लिए, किया सभी कुछ दान।
निर्भय वेद-प्रचार कर, किया आत्म बलिदान।।6।।

पद छोड़े क्षण नहीं लगा, मारी उनको लात।
हिन्दी हिन्दू के लिए, किया समर्पित गात।।7।।

नारी शिक्षा के लिए, किये प्रयत्न हजार।
मात सुमाता बन सके, वेद पढ़े सुविचार।।8।।

जामा मस्जिद से किया, मंत्रों का उच्चार।
वेद-ज्ञान सब के लिए, भेद-भाव बेकार।।9।।

दान-वृत्ति भी थी प्रबल, लोभ न मन अभिमान।
वेद विहित जीवन जिया, श्रद्धानन्द महान्।।10।।

जीवन का उद्धार कर, श्रद्धानन्द समान।
सत्संगति पारस मिले, जीवन बने महान्।।11।।

-प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट्.
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, भावनगर विवि.
बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर का

80वां वार्षिकोत्सव एवं 34वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

25 नवम्बर से 22 दिसम्बर, 2014

आर्य महिला सम्मेलन : 17 दिसम्बर गुरुकुल सम्मेलन : 21 दिसम्बर
अथर्ववेद पारायण यज्ञ : 11 से 22 दिसम्बर

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह : 22 दिसम्बर प्रातः 8 से 1:30 बजे

आशीर्वाद : डा.रघुवीर वेदालंकार अध्यक्षता : डॉ. अशोक कुमार चौहान
भजन : पं. ओमप्रकाश वर्मा एवं पं. सत्यपाल पथिक
मुख्य वक्ता : प्रो. शशि प्रभा कुमार, सत्यानन्द आर्य, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. महावीर अग्रवाल, डॉ. धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय, स्वामी धर्मेश्वरानन्द , स्वामी सम्पूर्णानन्द आदि।

निवेदक : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (आचार्य) कैप्टन रुद्रसेन, मन्त्री

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी का

46वां वार्षिकोत्सव

18 से 22 दिसम्बर, 2014

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा
15 दिसम्बर, 2013

यज्ञ ब्रह्मा : पं. शशिकान्त शास्त्री
भजन : श्रीमती सुलभा शास्त्री
प्रवचन : आचार्य संजय शास्त्री, डॉ. सूर्यदेव शास्त्री, आचार्य वीरेंद्र विक्रम, राजू वैज्ञानिक
पूर्णाहुति एवं वार्षिकोत्सव : 22 दिसम्बर
अध्यक्षता : श्री अरुण प्रकाश वर्मा

- सुशील आर्य, मन्त्री

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

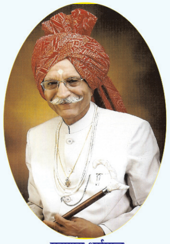

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्वयनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

अधिक जानकारी के लिए/किसी भी गीत को अपनी ट्यून बनाने के लिए लॉगऑन करें हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **- अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)**

आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज प्रशान्त विहार, रोहिणी का वार्षिकोत्सव 25 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक मनाया गया। इस अअवसर पर 24 नवम्बर को एक प्रभात फेरी रोहिणी के विभिन्न सैक्टरों से होते हुए निकाली गई। 25 नवम्बर से प्रारंभ हुए एक सप्ताह के वार्षिकोत्सव में सायंकालीनवेला में जयपुर से पधारे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य उर्षबुद्ध जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से उपनिषदों, अन्य धर्मग्रन्थ एवं वेद, वर्तमान में वेदज्ञान की प्रासंगिकता, राष्ट्रीयता जैसे विषयों पर अपना गहन चिंतन सामने रखा। इस अवसर पर जालंधर से आए भजनोपदेशक श्री गुलशन जी ने अपने मधुर एवं प्रेरणादायी भजनों से सभी को भाव-विभोर किया।

समारोह का समापन 1 दिसम्बर को हुआ। प्रातःकालीन यज्ञ के ब्रह्मा श्री शिवनाराण शास्त्री एवं आचार्य उर्षबुद्ध जी ने सुन्दर रीति से यज्ञ संपन्न कराया एवं आर्शीवचन दिया। यज्ञ क उपरांत मुख्य अतिथि ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर श्रीमती शिखा अरोड़ा एवं श्री सोहनलाल मुखी जी ने ध्वज-गीत का गान किया। उत्तरी-पश्चिमी वेद प्रचार मंडल के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी और आचार्य शिवनाराण शास्त्री जी एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे। आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णचंद पाहूजा जी ने सभी को धन्यवाद किया।

- मनोहरलाल चुघ, मन्त्री

आर्यसमाज जे.वी.टी.एस. गार्डन, छतरपुर विस्तार दिल्ली -74 का

11वां वार्षिकोत्सव 13-14-15 दिसम्बर, 2013

यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन समारोह 15 दिसम्बर, 2013

यज्ञ : प्रातः 8-9 बजे ब्रह्मा : श्री वीरेन्द्र शास्त्री

भजन : महाशय रुबेल सिंह एवं पं. कुलदीप विद्यार्थी

आशीर्वाद : स्वामी कर्मवीर जी महाराज ऋषि लंगर : दोपहर 1 बजे

- ओमकुमार आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के तत्वावधान में

जन्मभूमि टंकारा में ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं बोधोत्सव

21 से 27 फरवरी, 2014

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव

भजन : श्री सत्यपाल पथिक, श्री जगत वर्मा एवं श्री अमरसिंह आर्य वाचस्पति

बोधोत्सव : 27 फरवरी, 2014

अध्यक्षता : श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, प्रधान, गुजरात सभा

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम शोभा बढ़ाएं। *- रामनाथ सहगल, मन्त्री*

सार्वजनिक सूचना

आर्यसमाज के संन्यासियों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों एवं अन्य प्रतिष्ठानों के विशेष व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारियां एकत्र करने के लिए सभा की ओर से **श्रीमती मीनू बत्रा** को आउटसोर्सिंग की गई है। वे आपको मो. नं. **9650183335** से फोन करके जानकारियां देने के लिए निवेदन करेंगी। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उलब्ध कराने का कष्ट करें। प्राप्त सूचनाओं को सभा के आई.वी.आर. सिस्टम में जन-साधारण की जानकारी के लिए दर्ज किया जाएगा। सभा का आई.वी.आर.एस. नं. 011- 23488888 है।- **विनय आर्य, महामन्त्री**

देहरादून चलो! ओ३म् हरिद्वार चलो!

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून का 90वाँ वार्षिकोत्सव समारोह, स्वामी श्रद्धानन्द 87वें बलिदान दिवस पर विशाल भव्य शोभा यात्रा हरिद्वार एवम्

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय संग्रहालय दर्शन कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 21 दिसम्बर से सोमवार 23 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यात्रा व्यवस्था

2X2 की पुश-बैक डीलक्स बसों द्वारा आना-जाना, धर्मशाला में रहना, हरिद्वार भ्रमण, भोजन व्यवस्था तथा शोभायात्रा के लिए टोपी/दुपट्टा व झंडा आदि सेवाएँ हेतु प्रति व्यक्ति 1000 रुपये मात्र देय होगा।

दिनांक	समय	कार्यक्रम
21.12.2013	रात्रिः 9.00 बजे	देहरादून को प्रस्थान
22.12.2013	प्रातः 6.00 बजे	देहरूदन पहुँचकर नित्य कर्म से निवृत होना
	प्रातः 8.00 बजे	आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में नाश्ता व 90वें वार्षिकोत्सव में शामिल होना।
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोहपर 2.00 बजे	हरिद्वार को प्रस्थान व हर की पौढ़ी भ्रमण
	सायं 6.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी पहुँचना, भोजन व धर्मशाला में रात्रि विश्राम
23.12.2013	प्रातः 8.00 बजे	नाश्ता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में
	प्रातः 9.00 बजे	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोपहर 2.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी संग्रहालय दर्शन
	सायं 5.00 बजे	दिल्ली के लिए प्रस्थान
	रात्रि 10.3 0 बजे	दिल्ली पहुँचना

नोट : (1) अपने नजदीकी क्षेत्रानुसार संयोजक को पूरी धनराशि जमा करायें। (2) गर्म कपड़े, शाल/दुशाला ले कर चलें। (3) सीट बुक होने के पश्चात् धनराशि वापिस नहीं की जाएगी यह हस्तांतरित हो सकती है।

निवेदक : **महाशय धर्मपाल** अध्यक्ष - आर्य विद्या सभा; **ब्र. राज सिंह आर्य** प्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **धर्मपाल आर्य** व. उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **ओम प्रकाश आर्य** उपप्रधान - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **विनय आर्य** महामंत्री - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; **राजीव आर्य** महामंत्री - आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मुख्य संयोजक : **सतीश चड्डा**, आर्यसमाज कीर्तिनगर (मोबाईल : 9540041414, 9313013123)

क्षेत्रीय संयोजक : *पश्चिमी दिल्ली :* **रमेश चन्द्र** (सी-2, जनकपुरी, 9868242404), **वीरेन्द्र सरदाना** (ए-ब्लॉक, जनकपुरी, 9911140756), **ललित चौधरी** (विकासपुरी, 9911140756), **राजेन्द्र लाम्बा** (पश्चिम विहार, 9873697099), *पश्चिम-उत्तरी दिल्ली :* **जोगेन्द्र खट्टर** (रानीबाग, 9810040982), **सुरेन्द्र आर्य** (रोहिणी, 9811476663), *उत्तरी दिल्ली :* **महेन्द्र सिंह** (ओचन्दी, 9999148483), **मनवीर सिंह राणा** (केशवपुरम, 9971823677), *केन्द्रीय दिल्ली :* **अरूण प्रकाश वर्मा** (हनुमान रोड, 9810086759), *पूर्वी दिल्ली :* **अभिमन्यू चावला** (शाहदरा, 9013967759), **ईश कुमार नारंग** (दयानन्द विहार, 9911160975), **जगदीश मल्होत्रा** (कृष्णा नगर, 9013013802), *दक्षिणी दिल्ली :* **एस.पी. सिंह** (मेहरौली, 9868111709), **गोविन्द लाल नागपाल** (ग्रीन पार्क, 9811623552) **नरेन्द्र नारंग** (ईस्ट ऑफ कैलाश, 9810140975), **सुरेशचन्द** (गोविन्दपुरी, 9212082892), **चत्तर सिंह नागर** (मस्जिद मोठ, 9211501545)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर जन्मभूमि टंकारा यात्रा

24 फरवरी से 6 मार्च 2014 तक

दर्शनीय स्थान: अजमेर, पुष्करराज, ब्यावर, माऊंटआबू, उदयपुर, जयपुर, चितौड़गढ़ तथा हल्दीघाटी, टंकारा, द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, अक्षरधाम मन्दिर, वृन्दावन तथा मथुरा आदि।

किराया बस प्रति सवारी : रुपये 3500/-

प्रस्थान : 24 फरवरी सायं 4 बजे आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय गुडगांव से ब्यावर
25 फरवरी प्रात: 6 बजे ब्यावर से माऊण्ट आबू, रात्रि माऊण्ट आबू।
26 फरवरी प्रात: 6 बजे माऊन्ट आबू से चलकर सायं 3.00 बजे टंकारा।

26 व 27 फरवरी टंकारा में

28 फरवरी प्रात: 5 बजे टंकारा से चलकर द्वारिका, बेट द्वारिका रात्रि पोरबन्दर।
1 मार्च प्रात: 11 बजे पोरबन्दर से सोमनाथ मन्दिर, रात्रि राजकोट।
2 मार्च प्रात: 6 बजे राजकोट से गांधीनगर, अक्षरधाम देखकर रात्रि उदयपुर।
3 मार्च दोपहर 12 बजे उदयपुर से हल्दीघाटी- रात्रि चितौड़गढ़।
4 मार्च प्रात: 8 बजे चितौड़गढ़ से रात्रि अजमेर, पुष्करराज।
5 मार्च प्रात: 9 बजे अजमेर से चलकर रात्रि जयपुर।
6 मार्च प्रात: 7 बजे जयपुर से चलकर मथुरा एवं वृन्दावन देखकर सायं गुड़गांव।

इच्छुक महानुभाव सीटें बुक कराने तथा कार्यक्रम के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

यात्रा प्रबन्धक : मा. सोमनाथ
363-364, प्रताप नगर, गुड़गांव
फोन : 09811762364, 08800115646, 0124-2304873

अन्तर गुरुकुलीय संस्कृत व्याकरण अनुवाद एवं वैदिक सिद्धान्त प्रतियोगिता का आयोजन

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली -82 की ओर से अन्तर गुरुकुलीय प्रतियोगिता का आयोजन 27-28 दिसम्बर, 2013 को प्रात: 9 से 12 बजे तथा दोपहर 2 से 5 बजे तक किया जा रहा है। प्रतियोगिता पूर्णांक150 होंगे, जिसमें लिखित 100 अंक, अनुवाद के 30 अंक तथा वैदिक सिद्धान्त के 20 अंक होंगे। प्रतियोगिता का विवरण व नियमावली इस प्रकार है-

(क) अष्टाध्यायी मूल कण्ठस्थीकरण (ख) प्रथमावृत्ति (1-4) अध्याय
(ग) प्रथमावृत्ति (5-8) अध्याय (घ) धातुवृत्ति (माधवीया)लिखित
(ड़) काशिका (1-4) लिखित (च) काशिका (5-8) लिखित

पुरस्कार वितरण- 29 दिसम्बर रविवार को होगा।

नोट -1. प्रत्येक गुरुकुल से प्रत्येक खण्ड में दो-दो छात्र भाग ले सकते है। विजेता प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार दिया जाएगा। परीक्षकों का निर्णय मान्य होगा। 2. प्रतिभागियों को निर्देश हैं कि वे गुरुकुलीय परिवेश में पधारें एवं दिनचर्या का पालन करें। - *आचार्य सुधांशु (9350538952)*

शोक समाचार

श्री रामप्रकाश भार्गव नहीं रहे

रामगली आर्य समाज हरी नगर घंटाघर के पूर्व प्रधान, दानवीर एवं तत्कालीन संरक्षक श्री रामप्रकाश भार्गव जी का दिनांक 4 दिसम्बर, 2013 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सुभाष नगर (तिहाड़) श्मशान पर आर्य समाज हरी नगर घंटाघर के पदाधिकारियों की उपस्थिति में श्री सोमदेव शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया।

श्रीमती हर प्यारी का निधन

आर्यसमाज मोहन गार्डन नई दिल्ली की वयोवृद्ध कर्मक कार्यकत्री, यज्ञप्रेमी सदस्या श्रीमती हर प्यारी जी का 7 दिसम्बर, 2013 को लगभग 80 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से उत्तम नगर श्मशानघाट पर किया गया। वे अपने पीछे दो बेटों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन 18 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे उनके निवास म.नं. 43, गली नं.1, पार्ट-2, डिफेंस एन्कलेव, निकट एस.डी. पब्लिक स्कूल, बालाजी चौक, मोहन गार्डन, उत्तम नगर दिल्ली-59 पर किया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

इंटिग्रेटेड एकाडमी गाजियाबाद में योग शिविर सम्पन्न

सत्ययोग आश्रम ट्रस्ट द्वारा इंटिग्रेटेड एकाडमी ऑफ मैनेजमैंट टैक्नोलॉजी, गाजियाबाद में योग शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर योगी डॉ राज ने 120 प्रशिक्षुओं को सुक्ष्म अभ्यास कराते हुये सूर्य नमस्कार के साथ उत्तान पादासन, शलभासन, भुजंगासन, हलासन, नौकासन, आदि अभ्यासों को कराते हुये आसनों के द्वारा शरीर पर पडने वाले प्रभावों को बताते हुये कहा कि आसन जीवनदायी होते हैं तथा शारीरिक रोग मुक्ति का साधन हैं। डॉ. अग्निदेव शास्त्री ने प्राणायाम कराते हुये प्राणायाम के सूक्ष्म प्रभावों पर चर्चा करते हुए कहा कि प्राणायाम से मनुष्य तनाव मुक्त होता है। हमारे मनीषियों ने हजारों हजारों साल पहले स्वानुभूति के आधार पर बताया था कि योग-प्राणायाम रोगों को निर्मूल करके स्वास्थ्य को स्थिर रखने वाले साधन हैं।

श्री प्रवीण आर्य ने अपने सुमधुर संगीत 'हिम्मत न हारिये प्रभु नाम विसारिये, हँसते मुस्कुराते हुये जिन्दगी गुजारिये' के द्वारा निरंतर हँसते हुये जीवन जीने की प्रेरणा दी। डॉ. राकेश चावला ने इस तरह के योग शिविरों के निरंतर आयोजन पर बल दिया। - ***प्रेस सचिव***

आर्यसमाज मस्जिद मोठ का 106वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मस्जिद मोठ का 106वाँ वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती का130वाँ निर्वाण दिवस समारोह 10 नवम्बर, 2013 को सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार थे, आशीर्वाद स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल गौतम नगर ने दिया। समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्रसेन साहनी प्रधान, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 ने की। मुख्य अतिथि दानवीर महाशय धर्मपाल जी, चेयरमैन, एम.डी.एच. एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा थे। महाशय जी के इस समाज में प्रथम बार आगमन पर हर्ष की लहर दौड़ गयी तथा समाज के अधिकारियों, सदस्यों एवं दक्षिण दिल्ली की सभी समाजों को महाशय जी ने अपने स्वस्थ, कर्मठ एवं लगनशील जीवनके रहस्य सभी को बताये जिससे लोगों ने प्रेरणा ली। महाशय जी ने मंडल द्वारा प्रकाशित ट्रेक्ट आह्वान-आह्वान का विमोचन किया तथा आर्य समाज मस्जिद मोठ को 51,000 रुपयें की सहयोग राशि प्रदान की, जिस पर सभी उपस्थित सदस्यों ने महाशय जी का आभार व्यक्त किया तथा परमपिता परमात्मा से उनके स्वस्थ दीर्घायु की कामना की।

समारोह को श्री विनय आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सम्बोधित किया तथा महाशय जी के जीवन के अन छुये अनेक रहस्यों को सुनाकर सभी को रोमांचित किया। श्री राजीव आर्य, महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार तथा डॉ. सुधीर कुमार ने, श्री विनय गुप्ता ने भी सम्बोधित किया और महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्यसमाज ने दक्षिण दिल्ली की सभी समाजों के अधिकारियों, अतिथियों व समाज के वरिष्ठतम सदस्यों को सम्मानित किया। - ***चतर सिंह नागर, मन्त्री***

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लग्न एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?
आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?
आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?
आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

नि:शुल्क रिकार्डिंग कराएं

आर्य समाज के भजनोपदेशकों एवं उपदेशकों के लिए शुभ सूचना

आर्यसमाज के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक जो अपने भजनों-उपदेशों की ऑडियो-वीडियो रिकार्डिंग कराने के इच्छुक हों सम्पर्क करें-**डॉ. विजय दीक्षित, वी.एम.टी. स्टुडियो**
730, सै. 6, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली-22
मो. 9213499532, 9868787522

वधू चाहिए

आर्य युवक रवि शास्त्री, गौत्र कश्यप, आयु 30 वर्ष, वजन 67 किलो, 5फुट 10 इंच, एम.ए., बी.एड, पी.एच. डी. मासिक आय 65000/- रुपये पिता का अपना व्यवसाय, के लिए सुयोग्य, सुन्दर, सुशील आर्य कन्या चाहिए, इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें-

श्री राममूरत आर्य (पिता)
आर्य वस्त्रालय, रेलवे क्रॉसिंग, धौरुआ रोड, मालीपुर, अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) मो. 07666666991, 08127978254

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 दिसम्बर, 2013 से रविवार 15 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12/13 दिसम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 दिसम्बर, 2013

प्रतिष्ठा में,

विश्वव्यापी आर्य समाज के आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

87वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

बुधवार 25 दिसम्बर, 2013

यज्ञ प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150, 23365959; 09540040339

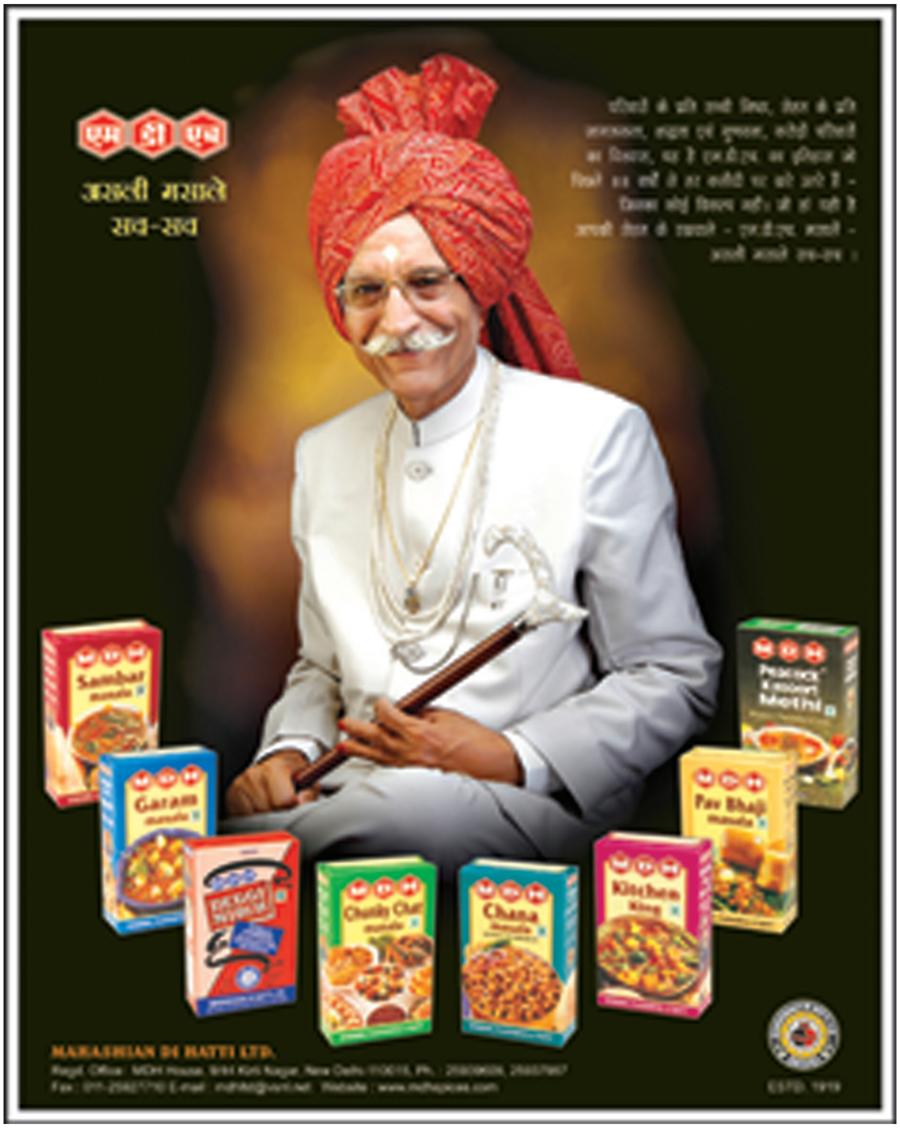

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर